जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए।। ७१ ।।

जबराईल फरिश्ता भी श्री राजजी के हुकम से रूहों की रक्षा करने के लिए आया था। वह भी अपनी ही सूरत है। धनी अपने हुकम से उसे भी अपने अन्दर मिला लेंगे (अक्षरधाम में रहेगा)।

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक।। ७२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप को संसार वाले अलग-अलग नामों से बोल रहे हैं तथा अलग-अलग रूपों में (धर्मों में) भेष बनाकर झगड़ रहे हैं। स्वामीजी कहते हैं कि अब कोई मत झगड़ो। सबका मालिक एक है और वह मैं हूं।

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन।
सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन।। ७३ ।।

हे मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी! सुनो, सबके धनी प्रगट हो रहे हैं। सबको अखण्ड सुख देकर ब्रह्माण्ड का प्रलय कर देंगे।

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर।
कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर।। ७४ ।।

चौदह लोकों के सचराचर ब्रह्माण्ड को योगमाया में अक्षर की नजर तले कायम करके सबको मनचाहे सुख देंगे।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६६४ ।।

सनन्ध-पत्री छोटी

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी से कहती हैं कि तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो। आत्मा के आधार हो। दिल के अन्दर विचार करके देखना, इस बात का विस्तार बहुत भारी है।

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछू अब।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हें सुनकर दौड़ना है। मेरी बहन! (शाकुमार) अब देरी करने की बात नहीं है। मुहम्मद साहब ने ऐसी खबर दी है। सुन्दरसाथजी! सुनकर सब दौड़ना।

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत।। ३ ।।

मैंने चौदह तबकों के धर्म ग्रन्थों को देखा है और उनकी हकीकत को समझा है। सब भविष्य की वाणी बोलते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब के कुरान में सबसे बड़ी बातें लिखी हैं (मुहम्मद साहब का ज्ञान सबसे अच्छा है)।

Nijanand App

महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकुंद।
आगम था पट बीच में, सो काढ्या पट निकंद।। ४ ।।

मुहम्मद साहब के कुरान के वचनों को सुनना है। हे भीम भाई! हे मुकुन्ददासजी! इस बात को सुनना। पहले से ही कुरान की भविष्यवाणी पर आज दिन तक परदा पड़ा था। वह परदा अब हटाकर भविष्य को जाहिर करती हूं।

आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह।। ५ ।।

सब धर्म ग्रन्थों में क्या हुआ है और भविष्य में क्या होना है, पहले से लिखा है। यह वाणी तो बहुत है, पर तुम्हें थोड़ा-सा बता रही हूं।

ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए।। ६ ।।

यह सारा खेल फरामोशी का है, जिसमें से तारतम ज्ञान के द्वारा आधी नींद उड़ाकर, बृज, रास और धाम का ज्ञान तुमको दिया। अब जागनी का भी ज्ञान देती हूं। इससे तुम सुन्दरसाथ को बुलाना।

तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत।
नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत।। ७ ।।

तीनों ब्रह्माण्ड की तारीख (हकीकत) का भेद प्यार से तुमको बताती हूं। पहली ब्रज की लीला नींद में, दूसरी रास की कुछ नींद में कुछ जागृत में तथा तीसरी जागनी पूर्ण जागृत अवस्था की है।

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस।
होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस।। ८ ।।

आदि आदम के पांच हजार सात सौ सैंतालीस वर्ष बाद ब्रह्माण्ड अक्षर की नजर में चढ़ेगा (उस समय विक्रम सम्वत् सत्तरह सौ अड़तालीस होगा तथा रसूल साहब की बारहवीं सदी शुरू होगी) रसूल साहब के एक हजार वर्ष बाद ब्रह्मसृष्टि खेल में उतरेगी, अर्थात् सोलह सौ अड़तीस से जागनी की लीला शुरू होगी।

यामें नव सै छेहंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान।
जल ऊपर तले से उमड़्या, हो गया एक जिमी आसमान।। ९ ।।

आदि आदम से जब नौ सौ छिहत्तर वर्ष बीते तब बृज का ब्रह्माण्ड प्रलय हुआ (नूह-तूफान हुआ), जिसमें ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया।

पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक।
फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक।। १० ।।

वहां से रूहें पार हुईं, रास में गईं और संसार का प्रलय हो गया, फिर यह तीसरा ब्रह्माण्ड पैदा हुआ। ऐसी कुरान से खुदा की गवाही मिलती है।

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस।
तबहीं दस सदी पर, होसी नब्बे बरीस।। ११ ।।

आदि आदम के पांच हजार छः सौ सैंतीस वर्ष जब बीते तब मुहम्मद साहब के दस सौ नब्बे वर्ष हुए (विक्रम सम्वत् सत्तरह सौ पैंतीस)।

Nijanand App

महंमद हुआ मेंहेदी, सैयद केहेलाया सही।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई।। १२ ।।

सत्रह सौ पैंतीस में रसूल साहब इमाम मेंहदी बन गए और वह सैयद मुहम्मद इबने इस्लाम कहलाए (विजया अभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार कहलाए), तब रसूल साहब को ऊपर लिखे खिताब दिए।

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल।
सूरत साफ जबराईल, आए मेंहेदी में मिले सकल।। १३ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी), असराफील (जागृत बुद्धि), जबराईल (जोश का फरिश्ता) सभी इमाम मेंहदी में आकर मिल गए।

हुआ हिंदुओं में जाहेर, हिंद से पाक मरद।
इस्क राह चलावसी, चालीस बरस लों हद।। १४ ।।

हिन्दुओं के बीच में पाक मर्द निष्कलंक अवतार जाहिर हुए और यहां से (१७३५ से १७७५ तक) चालीस वर्ष तक इश्क की राह में मोमिन चलेंगे।

नोट : १७३५ से १७७५ तक चालीस वर्ष ईसा रूह अल्लाह की बादशाही के हैं।

काबिल हिंद के बीच में, होसी इमाम रोसन।
ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन।। १५ ।।

कुरान में लिखा है काबुल और हिन्द के बीच में इमाम मेंहदी प्रगट होंगे। यह कुरान में इशारतों में लिखा है। इस समय दोनों रूहें मिल जाएंगी (श्यामा महारानी और मुहम्मद साहब की बसरी और मलकी दोनों सूरतें इमाम मेंहदी में मिलाईं)।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेदी पाक पूरन।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन।। १६ ।।

एक इमाम मेंहदी के बिना दूसरा कोई मर्द नहीं होगा। यही बारह हजार ब्रह्मसृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरी सृष्टि अर्थात् छत्तीस हजार के साथ जागनी का आनन्द लेंगे।

असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार।
बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार।। १७ ।।

असल में रूहें चालीस जुत्थ हैं और उनकी संख्या बारह हजार है, इनके तनों में चौबीस हजार कुमारिकाओं ने बैठकर रास देखी थी।

दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कई हांस।
सबके मनोरथ पूरने, करसी बड़ो विलास।। १८ ।।

दस वर्ष तक रूहें बड़े आनन्द के साथ मिलकर खेलेंगी। उसमें कई प्रकार का आनन्द विलास होगा। सबके मनोरथ पूर्ण होंगे (अर्थात् सत्तरह सौ पैंतीस से पैंतालीस के बीच परमधाम की वाणी का अवतरण हुआ)।

सत वैराट में पसरया, काढ्या कुली जालिम।
चौदे तबक सचराचर, नूर इस्क हमारा हम।। १९ ।।

यह सत ब्रह्माण्ड में फैला तथा कलियुगी ज्ञान का अन्त हुआ। चौदह तबकों के जीवों में जानकारी फैली और हम रूहों को इश्क का ज्ञान मिला।

Nijanand App

एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम।
बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम।। २० ।।

अब तारतम वाणी के विस्तार से सारे संसार के अत्याचार खत्म हो गए। सारे संसार में अखण्ड का सुख फैला और कर्म के बन्धन टूटे।

जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम।
मन चाह्या सुख दे सबों, हंसते उठे घर धाम।। २१ ।।

जब ग्यारहवीं सदी पूरी हुई तो सम्वत् १७४५ में सब जागनी रास पूर्ण हो गया, अर्थात् जागनी के वास्ते पूरी वाणी का अवतरण हो गया। सबको मनचाहे सुख मिले और यहां बैठे-बैठे चितवन से परमधाम अनुभव होने लगा।

पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस।
बनी आदम पसु पंखी, नूर इस्क पिलाया रस।। २२ ।।

ग्यारहवीं सदी के तीस वर्ष बाद (सम्वत् १७७५) से सब संसार के जीवों को भी इश्क रस अर्थात् दुनियां में वाणी पसरनी शुरू हुई।

रोसनाई नूर बुध की, रही न किसी की हाम।
बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम।। २३ ।।

तारतम की वाणी के प्रकाश से किसी की कोई चाहना बाकी नहीं रही। बारहवीं सदी पूर्ण होने पर अर्थात् सम्वत् १८४८ में सारे ब्रह्माण्ड को इनाम मिलेंगे।

अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर।
बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर।। २४ ।।

अक्षर की दोनों दृष्टि (जबराईल और असराफील) तारतम ज्ञान में सराबोर हो जाएंगी। तब एक सौ बीस वर्ष बाद चर-अचर ब्रह्माण्ड अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगा।

ए तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब।
ए दिन दिल में आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब।। २५ ।।

जबराईल और असराफील तुम्हारी चाहना लेकर बैठे थे। हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हारे वास्ते कुरान को देखा और यह कयामत की गणना बताई है, इसलिए इस बात को हृदय में रखकर सुन्दरसाथ को जल्दी बुलाओ।

बेरिज करी वैराट की, ए पढ़ियो चित दे।
खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए।। २६ ।।

वैराट को अखण्ड करने का हिसाब मैंने बता दिया है। उसको चित्त देकर समझो। मैंने तुमको जागनी, रास के भेद दे दिए हैं। यह ज्ञान सब संसार को समझा दो।

Nijanand App

मेंहेदी हदां कर दई, घर इमाम बताई राह।
पोहोंचे अर्स मेयराज को, हंस मिलियां रूहें खुदाए।। २७ ।।

मेंहदी ने कुरान के हिसाब से सारी सीमा बता दी है और इमाम साहब ने रूहों को घर चलने का रास्ता बता दिया है। अब सब रूहें हंसकर मिलेंगी और उठकर श्री राजजी के दर्शन करेंगी।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। १६९१ ।।

।। सम्पूर्ण प्रकरण तथा चौपाइयों का संकलन ।। प्रकरण ।। २१४ ।। चौपाई ।। ६३६० ।।

।।सनन्ध सम्पूर्ण।।

Nijanand App